FOREST RESEARCH CENTRE FOR ECO-REHABILITATION

3/1 Lajpat Rai Road, New Katra, Prayagraj
Indian Council of Forestry Research & Education, Dehradun
Ministry of Environment, Forest and Climate Change, GOI, New Delhi

TRAINING ON BAMBOO PROPAGATION, MANAGEMENT AND MARKETING IN UTTAR PRADESH

As an activity under Azadi ka Amrit Mahotasav a Training on 'Bamboo Propagation, Management and Marketing in Uttar Pradesh' was organized in the Forestry and Environment Awareness Generation Camp of FRCER Prayagraj at Magh Mela area on 15th February 2021. The event was inaugurated with the lighting of the lamp by the Dr. Sanjay Singh, Scientist-G & Head and other dignitaries.

Later Dr. Singh delivered upon different methods of bamboo propagation which can be practiced by the farmers/growers for raising plants for establishment of bamboo nurseries and plantation purpose.

Senior scientist Alok Yadav stressed on the promotion of bamboo cultivation among farmers in Uttar Pradesh and also apprised about its various species suitable for the state and their management in filed for optimal benefit.

In this sequence, Dr. Anubha Srivastava, Scientist-D apprised the participants about the marketing bamboo and its products to increase the livelihood opportunities through bamboo.

A group activity and interaction was also organized in the training program, through which apart from promoting the cultivation of bamboo, points were discussed about its advantages and disadvantages in the environment and human life. Various farmers present in the meeting got the solution of various problems related to bamboo cultivation and its products from the subject experts of the Centre.

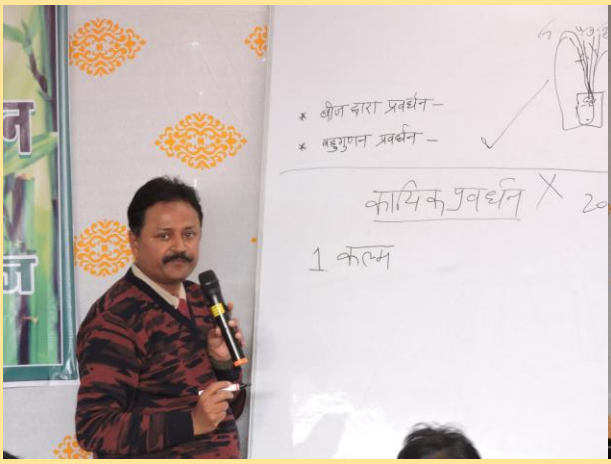

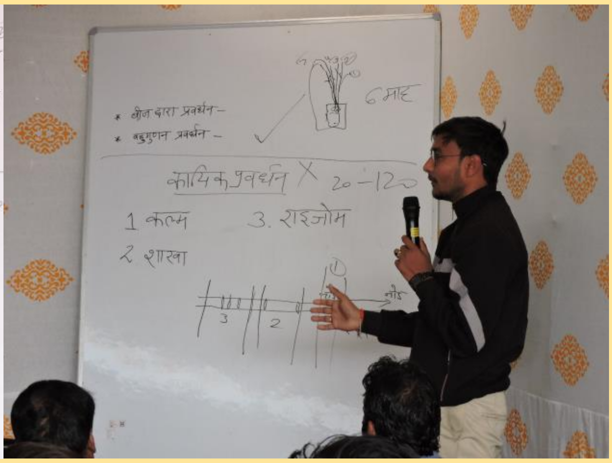

At the end of the program vote of thanks was given by Dr. Anita Tomar, Scientist –F. of the Center. More than 50 trainees participated in the programme. Dr. Kumud Dubey, Scientist-E, Dr. SD Shukla, STO, Ratan Gupta, TO and research scholars working in various projects were present in the program.

Azadi Ka Amrit Mahotsav
प्रशिक्षण कार्यक्रम
उत्तर प्रदेश में बाँस : प्रवर्धन, प्रबंधन एवं विपणन
दिनांक : 15.02.2022

Azadi Ka Amrit Mahotsav
प्रशिक्षण कार्यक्रम
दिनांक : 15.02.2022

प्रयागराज 3
अमृत प्रभात
प्रयागराज, बुधवार, 16 फरवरी 2022

सांस्कृतिक संध्या पर बिरहा, लोकगीत की प्रस्तुति

प्रयागराज (नि.सं.)। राष्ट्रीय खादी ग्रामोद्योग प्रदर्शनी माघ मेला 2022 त्रिवेणी मार्ग परेड मैदान प्रयागराज में सांस्कृतिक संध्या पर राम बाबू यादव लोकगीत, बिरहा गायक व उनके साथी कलाकारों के द्वारा लोक गायन, बिरहा गायन की प्रस्तुति दी गई। मेले में विभिन्न विभिन्न स्थानों पर खादी व ग्रामोद्योग की वस्तुओं की आगंतुकों, दर्शकों द्वारा खरीदारी भी की गई। मेले में बंगाल, कश्मीर, राजस्थान, झारखंड, बिहार, पंजाब व उत्तर प्रदेश के कई स्टाल लगाये गये हैं। इस अवसर पर राम औतार यादव मंडलीय खादी ग्रामोद्योग अधिकारी, जवाहर लाल प्राचार्य मंडलीय प्रशिक्षण केंद्र अनुवां, राकेश मोहन गुप्ता मंडलीय जेस्ट लेखा परीक्षक आदि उपस्थित रहे।

प्रवर्धन, प्रबंधन, विपणन पर दिया प्रशिक्षण

प्रयागराज (नि.सं.)। परि पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र द्वारा माघमेला स्थित वानिकी प्रसार एवं चेतना शिविर के समापन के उपलक्ष्य में आज उत्तर प्रदेश में बांस का प्रवर्धन प्रबन्धन एवं विपणन, विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। शुभारम्भ केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह के साथ अन्य वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्जवलित कर हुआ। केन्द्र प्रमुख डॉ. सिंह ने कार्यक्रम विषय पर प्रकाश डालते हुए पर्यावरण तथा मानव जीवन में बांस की अहम भूमिका पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के विभिन्न संस्थानों व केन्द्रो में बांस परियोजनाओं के माध्यम से इसके उत्पाद तथा पर्यावरण व आजीविका में इसके हस्तक्षेप पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित प्रशिक्षणार्थियों को बांस के विभिन्न प्रयोग से आजीविका को बढ़ाने का तरीका बताया। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने उत्तर प्रदेश में बांस को बढ़ावा देने पर बल देने के साथ ही इसकी विभिन्न प्रजातियों से भी अवगत कराया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने बांस के माध्यम से आजीविका को बढ़ाने के लिये इससे तैयार विभिन्न वस्तुओं के विक्रय के लिये उचित माध्यम तथा स्थान से अवगत कराया। कार्यक्रम में एक समूह गतिविधि तथा परस्पर संवाद का भी आयोजन किया गया जिसके माध्यम से बांस की खेती को बढ़ावा देने के साथ ही इससे पर्यावरण तथा मानव जीवन में लाभ व हानि आदि बिन्दुओं पर चर्चा की गयी। कार्यक्रम में 50 से अधिक प्रशिक्षणर्थियों ने भाग लिया।

वानिकी प्रसार एवं चेतना शिविर का समापन

बाँसः प्रवर्धन, प्रबंधन एवं विपणन पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

ङप्रयागराज।ङ पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र द्वारा माघमेला स्थित वानिकी प्रसार एवं चेतना शिविर के समापन के उपलक्ष में आज दिनांक 15.02.2022 को ङ'उत्तर प्रदेश में बाँस का प्रवर्धन प्रबन्धन एवं विपणन'ङ विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ केन्द्र प्रमुख डॉ0 संजय सिंह के साथ अन्य वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्जवलित करके हुआ। केन्द्र प्रमुख डा0 सिंह ने कार्यक्रम विषय पर प्रकाश डालते हुए पर्यावरण तथा मानव जीवन में बाँस की अहम भूमिका पर व्याख्यान प्रस्तुत किया साथ ही भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के विभिन्न संस्थानों व केन्द्रो में बाँस परियोजनाओं के माध्यम से इसके उत्पाद तथा पर्यावरण व आजीविका में इसके हस्तक्षेप पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित प्रशिक्षणाथियों को बाँस के विभिन्न प्रयोग से आजीविका को बढ़ाने का तरीका बताया। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने उत्तर प्रदेश में बाँस को बढ़ावा देने पर बल देने के साथ ही इसकी विभिन्न प्रजातियों से भी अवगत कराया। इसी क्रम में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 अनुभा श्रीवास्तव ने बाँस के माध्यम से आजीविका को बढ़ाने हेतु इससे तैयार विभिन्न वस्तुओं के विक्रय हेतु उचित माध्यम तथा स्थान से अवगत कराया। कार्यक्रम में एक समूह गतिविधि तथा परस्पर संवाद का भी आयोजन किया गया जिसके माध्यम से बाँस की खेती को बढ़ावा देने के साथ ही इससे पर्यावरण तथा मानव जीवन में लाभ व हानि आदि बिन्दुओं पर चर्चा की गयी। सभा में उपस्थित विभिन्न किसानों ने बाँस की खेती तथा इसके उत्पाद सम्बन्धी विभिन्न समस्याओं का निवारण केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिकों से प्राप्त किया। कार्यक्रम के अन्त में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 अनीता तोमर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। उक्त आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के साथ ही केन्द्र द्वारा माघमेला स्थित वानिकी प्रसार एवं चेतना शिविर का समापन हुआ। कार्यक्रम में 50 से अधिक प्रशिक्षणथियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 कुमुद दुबे के साथ वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डा0 एस0 डी0 शुक्ला, रतन गुप्ता तथा विभिन्न परियोजनाओं में कार्यरत शोधछात्र आदि उपस्थित रहे।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा इलाहाबाद विश्वविद्यालय का बी0ए0 परीक्षा वर्ष 2011 अनुक्रमांक 554098, इनरोलमेन्ट नम्बर-Ù0820274 एवं एम0ए0 परीक्षा वर्ष 2013 अनुक्रमांक 1625 इनरोलमेन्ट नम्बर-Ù0820274 का मूल प्रमाण पत्र वास्तव में खो गया है।

रितू सिंह पुत्री सन्तोष कुमार सिंह, पता-ग्राम व पोस्ट-बाबू की खजूरी, मेहनगर, आजमगढ़।

वानिकी प्रसार एवं चेतना शिविर का समापन

बाँस : प्रवर्धन, प्रबंधन एवं विपणन पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

बालजी न्यूज

प्रयागराज–पारि–पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र द्वारा माघमेला स्थित वानिकी प्रसार एवं चेतना शिविर के समापन के उपलक्ष में मंगलवार 15 फरवरी 2022 को उत्तर प्रदेश में बाँस का प्रवर्धन प्रबन्धन एवं विपणन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ केन्द्र प्रमुख डॉ0 संजय सिंह के साथ अन्य वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्जवलित करके हुआ। केन्द्र प्रमुख डा0 सिंह ने कार्यक्रम विषय पर प्रकाश डालते हुए पर्यावरण तथा मानव जीवन में बाँस की अहम भूमिका पर व्याख्यान प्रस्तुत किया साथ ही भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के विभिन्न संस्थानों व केन्द्रो में बाँस परियोजनाओं के माध्यम से इसके

उत्पाद तथा पर्यावरण व आजीविका में इसके हस्तक्षेप पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित प्रशिक्षणार्थियों को बाँस के विभिन्न प्रयोग से आजीविका को बढ़ाने का तरीका बताया। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने उत्तर प्रदेश में बाँस को बढ़ावा देने पर बल देने के साथ ही इसकी विभिन्न प्रजातियों से भी अवगत कराया। इसी क्रम में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डा अनुभा श्रीवास्तव ने बाँस के माध्यम से आजीविका को बढ़ाने हेतु इससे तैयार विभिन्न वस्तुओं के विक्रय हेतु उचित माध्यम तथा स्थान से अवगत कराया। कार्यक्रम में एक समूह गतिविधि तथा परस्पर संवाद का भी आयोजन किया गया जिसके माध्यम से बाँस की खेती को बढ़ावा देने के साथ ही इससे पर्यावरण तथा मानव जीवन में लाभ व हानि आदि बिन्दुओं पर चर्चा की गयी। सभा में उपस्थित विभिन्न किसानों ने बाँस की खेती तथा इसके उत्पाद सम्बन्धी विभिन्न समस्याओं का निवारण केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिकों से प्राप्त किया। कार्यक्रम के अन्त में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 अनीता तोमर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। उक्त आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के साथ ही केन्द्र द्वारा माघमेला स्थित वानिकी प्रसार एवं चेतना शिविर का समापन हुआ। कार्यक्रम में 50 से अधिक प्रशिक्षणर्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 कुमुद दुबे के साथ वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डा0 एस0 डी0 शुक्ला, रतन गुप्ता तथा विभिन्न परियोजनाओं में कार्यरत शोधछात्र आदि उपस्थित रहे।

वानिकी प्रसार एवं चेतना शिविर का समापन

बाँस, प्रवर्धन, प्रबंधन एवं विपणन पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

प्रभात वंदना संवाददाता

प्रयागराज। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र द्वारा माघमेला स्थित वानिकी प्रसार एवं चेतना शिविर के समापन के उपलक्ष में 'उत्तर प्रदेश में बाँस का प्रवर्धन प्रबन्धन एवं विपणन' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ केन्द्र प्रमुख डॉ0 संजय सिंह के साथ अन्य वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्जवलित करके हुआ। केन्द्र प्रमुख डा0 सिंह ने कार्यक्रम विषय पर प्रकाश डालते हुए पर्यावरण तथा मानव जीवन में बाँस की अहम भूमिका पर व्याख्यान प्रस्तुत किया साथ ही भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के विभिन्न संस्थानों व केन्द्रो में बाँस परियोजनाओं के माध्यम से इसके उत्पाद तथा पर्यावरण व आजीविका में इसके हस्तक्षेप पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित प्रशिक्षणार्थियों को बाँस के विभिन्न प्रयोग से आजीविका को बढ़ाने का तरीका बताया। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने उत्तर प्रदेश में बाँस को बढ़ावा देने पर बल देने के साथ ही इसकी विभिन्न प्रजातियों से भी अवगत कराया। इसी क्रम में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 अनुभा श्रीवास्तव ने बाँस के माध्यम से आजीविका को बढ़ाने हेतु इससे तैयार विभिन्न वस्तुओं के विक्रय हेतु उचित माध्यम तथा स्थान से अवगत कराया। कार्यक्रम में एक समूह गतिविधि तथा परस्पर संवाद का भी आयोजन किया गया जिसके माध्यम से बाँस की खेती को बढ़ावा देने के साथ ही इससे पर्यावरण तथा मानव जीवन में लाभ व हानि आदि बिन्दुओं पर चर्चा की गयी। सभा में उपस्थित विभिन्न किसानों ने बाँस की खेती तथा इसके उत्पाद सम्बन्धी विभिन्न समस्याओं का निवारण केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिकों से प्राप्त किया। कार्यक्रम के अन्त में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 अनीता तोमर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। उक्त आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के साथ ही केन्द्र द्वारा माघमेला स्थित वानिकी प्रसार एवं चेतना शिविर का समापन हुआ। कार्यक्रम में 50 से अधिक प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 कुमुद दुबे के साथ वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डा0 एस0 डी0 शुक्ला, रतन गुप्ता तथा विभिन्न परियोजनाओं में कार्यरत शोधछात्र आदि उपस्थित रहे।

री 2022 • 04

वानिकी प्रसार एवं चेतना शिविर खत्म

प्रयागराज। मंगलवार को माघ मेला क्षेत्र में वानिकी प्रसार एवं चेतना शिविर का समापन हुआ। शिविर में बांस प्रवर्धन, प्रबंधन व विपणन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में विशेषज्ञों ने पर्यावरण और मानव जीवन में बांस की उपयोगिता बताई। केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने बांस के कल्ले से नये-नये पौधे तैयार करना बताया। वैज्ञानिक आलोक यादव ने बांस की कई प्रजातियों की जानकारी दी। डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने बांस से आजीविका बढ़ाने व इससे तैयार वस्तुओं के विक्रय के माध्यम से अवगत कराया।

वानिकी प्रसार एवं चेतना शिविर पर बांस की खेती पर चर्चा

प्रयागराज। माघ मेले में पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र की ओर से वानिकी प्रसार एवं चेतना शिविर का बुधवार को समापन हो गया। इस मौके पर उत्तर प्रदेश बाँस का प्रवर्धन प्रबंधन एवं विपणन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह के साथ अन्य वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने पर्यावरण तथा मानव जीवन में बांस की अहम भूमिका पर व्याख्यान दिया। संवाद

वानिकी प्रसार एवं चेतना शिविर का समापन

बाँसः प्रवर्धन, प्रबंधन एवं विपणन पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

कार्यालय संवाददाता

प्रयागराज। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र द्वारा माघमेला स्थित वानिकी प्रसार एवं चेतना शिविर के समापन के उपलक्ष में 'उत्तर प्रदेश में बाँस का प्रवर्धन प्रबन्धन एवं विपणन'ङ विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ केन्द्र प्रमुख डॉ0 संजय सिंह के साथ अन्य वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्जवलित करके हुआ।

केन्द्र प्रमुख डा0 सिंह ने कार्यक्रम विषय पर प्रकाश डालते हुए पर्यावरण तथा मानव जीवन में बाँस की अहम भूमिका पर व्याख्यान प्रस्तुत किया साथ ही भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के विभिनन संस्थानों व केन्द्रो में बाँस परियोजनाओं के माध्यम से इसके उत्पाद तथा पर्यावरण व आजीविका में इसके हस्तक्षेप पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित प्रशिक्षणाथिन्यों को बाँस के विभिनन प्रयोग से आजीविका को बढ़ाने का तरीका बताया। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने उत्तर प्रदेश में बाँस को बढ़ावा देने पर बल देने के साथ ही इसकी विभिनन प्रजातियों से भी अवगत कराया।

इसी क्रम में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 अनुभा श्रीवास्तव ने बाँस के माध्यम से आजीविका को बढ़ाने हेतु इससे तैयार विभिनन वस्तुओं के विक्रय हेतु उचित माध्यम तथा स्थान से अवगत कराया। कार्यक्रम में एक समूह गतिविधि तथा परस्पर संवाद का भी आयोजन किया गया जिसके माध्यम से बाँस की खेती को बढ़ावा देने के साथ ही इससे पर्यावरण तथा मानव जीवन में लाभ व हानि आदि बिन्दुओं पर चर्चा की गयी। सभा में उपस्थित विभिनन किसानों ने बाँस की खेती तथा इसके उत्पाद सम्बन्धी विभिनन समस्याओं का निवारण केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिकों से प्राप्त किया। कार्यक्रम के अन्त में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 अनीता तोमर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। उक्त आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के साथ ही केन्द्र द्वारा माघमेला स्थित वानिकी प्रसार एवं चेतना शिविर का समापन हुआ। कार्यक्रम में 50 से अधिक प्रशिक्षणथिन्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 कुमुद दुबे के साथ वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डा0 एस0 डी0 शुक्ला, रतन गुप्ता तथा विभिनन परियोजनाओं में कार्यरत शोधछात्र आदि उपस्थित रहे।